तेरापंथ धर्मसंघ के 147वाँ मर्यादा महोत्सव, आचार्य प्रवर के स्वागत में पलक पावड़ें बिछाते श्रावक–श्राविकाएं, धवल सेना के श्रद्धानिष्ठ भाव महामन्त्र की गूंज और समता से युक्त ओतप्रोत वातावरण में सराबोर राजलदेसर में थळी के इतिहास के पन्नों पर नया अध्याय जोड़ने वाले राष्ट्र सन्त आचार्य महाश्रमण के नेतृत्व में आयोजित मर्यादा महोत्सव गुरुवार को सम्पन्न हुआ। धर्म एवं अहिंसा का धर्मध्वजा थामे निरन्तर आगे बढती आचार्यश्री के साथ कदमताल करती धवलसेना की मर्यादा और अनुषासन को देखने वाले श्रावक समाज का मन भी परिवर्तन की राह की ओर जाने के लिए मचल उठा। देष के विभिन्न अंचल से आए प्रवासियों के अलावा सर्वसमाज की उपस्थिति मर्यादा महोत्सव की साक्षी बनी तो देष–विदेष के लोग नये आचार्य के रूप में मिले। एक युवा राष्ट्रसन्त में नयी आध्यात्मिक क्रान्ति की झलक देखते नजर आए। ऐसे ही अद्भुत नजारे प्रस्तुत कर रहा था तीन दिवसीय मर्यादा महोत्सव। नये संकल्प और अहिंसा आन्दोलन के माध्यम से मानव को मानव से जोड़ने की विचार धारा प्रवाहित हुई। अणुव्रत आन्दोलन और व्रतों से समाज में परिवर्तन, षिक्षा और सबको काम की भावना से सराबोर महोत्सव में विष्व का नेतृत्व करने वाले भारत की तरुणाई ने अंगड़ायी ली।

तेरापंथ का 147वां महाकुम्भ मर्यादा–महोत्सव सम्पन्न

राजलदेसर, 10 फरवरी। मर्यादा समवसरण की तरफ बढते धवल सेनानियों के कदम, आकाश में लहराता, पचरंगा जैन ध्वज, श्रद्धालुओं को आशीर्वाद देते गतिशील आचार्यश्री महाश्रमण, हजारों लोगों का कारवां देखते ही बन रहा था। आचार्यश्री महाश्रमण जैसे ही मर्यादा समवसरण में अपनी शिष्य मण्डली के मध्य स्थित अपने आसन पर विराजमान हुए तो सहसा देवराज इन्द्र के दरबार का दृश्य साकार हो उठा। आसन पर विराजमान होने के बाद महामंत्र का मंगल उच्चारण वातावरण को मंगलमय बना रहा था। भक्ति में डूबोता जय घोष और मर्यादाओं की स्वर लहरियों के इन दृश्यों को कैद करने वाली हजारों–हजार आंखें इस अमिट छाप को कभी नहीं भूला नहीं सकती। अवसर था तेरापंथ धर्मसंघ के 147वें और आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में होने वाले प्रथम मर्यादा महोत्सव के समापन का।

मेरे लिए संघ सर्वोपरि – आचार्य महाश्रमण

मैं साधना के विकास को सर्वोपरि महत्व देता हूँ।

इस अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमण ने धर्मसंघ के नाम अपने सम्बोधन में कहा – मेरे लिए तेरापंथ शासन, भैक्षव शासन प्रथम है। चित्त समाधि सबके रहे यह प्रयास मैनें किया है। मैं चाहता हूँ, आत्मनिष्ठा सबमें पुष्ट बनी रहें। सबमें संघनिष्ठा, आचारनिष्ठा, मर्यादानिष्ठा, आज्ञानिष्ठा बनी रहे। उन्होंने आचार्य भिक्षु द्वारा निर्मित्त पांचों मौलिक मर्यादाओं को पांच महास्तंभ बताते हुए कहा कि एक आचार्य के अनुशासन में चलना, यह बीच का प्रमुख स्तम्भ है। अन्य चारों मर्यादाएं चार तरफ के महास्तम्भ हैं। इन महास्तम्भ के आधार पर ही तेरापंथ रूपी इमारत खड़ी है। इसमें अतीत की शुद्धि, वर्तमान की भारहीनता और भविष्य के लिए नयी पुष्टि दी गई है।

उन्होंने तेरापंथ शासन के प्रति समर्पित भाव को दर्शाते हुए कहा कि धर्मसंघ्स में चित्त समाधि रहे, ऐसा मेरा प्रयास है। संघ में साधना का विकास होना चाहिए। मैं इसे सर्वाधिक महत्व देता हूँ। साधना के विकास में कोई कमी नहीं होनी चाहिए। कषायमन्दता और निर्धारित आचार में निष्ठा होनी चाहिए।

आचार्य महाश्रमण ने विभिन्न विषयों पर बोलते हुए कहा – ज्ञानशाला एक बहुत बड़ा उपक्रम है, इसका एक बहुत बड़ा नेटवर्क है। अपेक्षानुसार ज्ञानशालाओं को ओर पोषण दिया जाना चाहिए। जहाँ ज्ञानशाला नहीं है, वहाँ ज्ञानशाला खोली जाए ताकि बच्चों को अच्छे ढंग से तैयार किया जा सके, उनमें संस्कारों का निर्माण किया जा सकें।

जैन विद्या की परीक्षाओं में शुद्धता आयें। उनमें नकल नहीं इसके लिए पूर्व ही सबको संकल्प करवा दिये जाने चाहिए। इन परीक्षाओं मे भाग लेने के लिए ज्यादा से ज्यादा प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। जैन विश्व भारती द्वारा संचालित उपक्रम अच्छें चलें। उपासक श्रेणी गुरुदेव तुलसी का प्रसाद है, इसका और विकास होना चाहिए। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम नई संस्था है। संघ के बारे में उन्हें जानकारी मिले और संघ से भी उन्हें पोषण मिले।

खानपान की शुद्धता पर बोलते हुए गुरुदेव ने कहा – भोजनालयों में जमींकन्द का प्रयोग न हो। मुख्य रूप से मूली, आलू, गाजर, शकरकन्द, लहसुन व प्याज इन छः जमींकन्द का व्यक्तिगत रूप में रूप में त्याग रहना चाहिए। इनमें सबसे ज्यादा जीव होते हैं।

समाज में भवन बनते हैं। उन भवनों के उद्घाटन या लोकार्पण समारोह में साधु–सन्तों का सान्निध्य प्राप्त हो सकता है मगर शिलालेख में सान्निध्य का अंकन नहीं होना चाहिए। साधु के अन्तरंग कार्यों की फोटो नहीं लेनी चाहिए। फोटो का दुरूपयोग भी नहीं होना चाहिए।

दृष्टि के प्रति जागरुकता रखनी चाहिए। मौखिक दृष्टि से ज्यादा महत्वपूर्ण है लिखित दृष्टि।

इस वर्ष चलेगा नषामुक्ति अभियान

आचार्य श्री महाश्रमण ने संघ के लिए वर्ष भर के कार्यों का फरमान करते हुए कहा – वर्तमान विश्व की एक ज्वलंत समस्या है – नशा। मैं चाहता हूँ समाज नशे से मुक्त रहे। नशा जीवन की सबसे खतरनाक स्थिति है। इस ओर हमें ध्यान देना होगा और सभी को नशे से मुक्त बनाने का महत्वपूर्ण कार्य करना होगा। उन्होंने इस वर्ष के लिए 12 व्रती श्रावकों को तैयार करने के साथ ही चौबीसी एवं श्रावक संबोध नामक ग्रंथ को कंठस्थ कराने पर जोर दिया एवं इस ओर विशेष जागरूकता से कार्य करने के लिए साधु–साध्वियों एवं समण–समणियों को इंगित किया।

संघीय संस्थाएं चुनाव को राजनीतिक अखाड़ा न बनाएं

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा – धर्मसंघ की सभी संस्थाओं में पवित्रता बनी रहे। इनमें मनमुटाव की बजाए मनाव को महत्व दिया जाना चाहिए। मतभेद और मन–भेद दोनों में गहरा अन्तर है। मतभेद भले ही हो, मनभेद नहीं होना चाहिए। मतभेद सुलझ सकते हैं मनभेद सुलझना बड़ी कठिन कार्य है। धर्मसंघ की संस्थाओं में शालीनता रहनी चाहिए। चुनाव भी हो तो शुद्ध तरीके से होने चाहिए, उसे राजनीतिक अखाड़ा नहीं बनाना चाहिए। अन्य सभी संस्थाओं के बारे में उन्होने कहा – उनके कार्यो में शुद्धता रहे, इन संस्थाओं को एक दूसरे का पोषण मिलते रहना चाहिए और इनका विकास उत्तरोत्तर निरन्तर होता रहे। उन्होंने अणुव्रत के क्षेत्र में तेरापंथी सभाओं, प्रेक्षाध्यान के सन्दर्भ में तेरापंथ महिला मण्डल एवं जीवन विज्ञान के क्षेत्र में तेरापंथ युवक परिषद् को प्रमुखता से कार्य करने का इंगित किया।

कार्यक्रमो में न हों अनावष्यक खर्च

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा – समाज में आडम्बर मुक्त एवं सादगीयुक्त कार्यक्रम हों तो ज्यादा गरिमामय होंगे। वर्तमान समय में धार्मिक, सामाजिक कार्यों में आडम्बर प्रदर्शन न हो, इसकी ज्यादा अपेक्षा है। कार्यक्रम आयोजित होने चाहिए, पर उनमें अनावश्यक खर्चे न हो इस ओर ध्यान देना जरूरी है।

आज्ञा में रहने से हम सभी सुरक्षित रहते हैं

– साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

आचार्य भिक्षु द्वारा निर्मित्त मर्यादाएं एवं तेरांपथ के ऐतिहासिक पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा – आचार्य भिक्षु के पास अनुभव और नियंत्रण दोनों थे इसलिए आज तेरापंथ धर्मसंघ और दृढता के साथ चल रहा है। एक गुरु का नेतृत्व, अनुशासन, आज्ञा का बहुत महत्व है हमारे संघ में। हमारे धर्मसंघ में ऐसे संस्कार है जिसमें आज्ञा को मुख्य आधार मानकर जीवन जीते हैं। गुरु आज्ञा सुरक्षा कवच है। आज्ञा में रहने से हम सुरक्षित रहते है। वे ही व्यक्ति सफल हो सकते है, विकास कर सकते है जो गुरु के प्रति समर्पित रहते हैं।

कार्यक्रम में इन्होंने ने भी रखे विचार

समारोह का शुभारम्भ मुनि दिनेशकुमार द्वारा ''भारी मर्यादा बांधी संघ में'' से की। महिला मण्डल, तेरापंथ युवक परिषद् ने 'प्राण स्युं भी संघ म्हानें प्यारा लागे' –– संयुक्त रूप से प्रस्तुत की। मुमुक्षु परिवार ने 'जय मर्यादा जय शासन, जय मर्यादा अनुशासन,' साध्वी वृन्द ने ''वो तेरापंथ तकदीर कठै'' और मुनिवृन्द ने 'नया उत्साह जगााना है' गीतिका प्रस्तुत की। समारोह में मुनि गिरिश ने अपनी कृति 'आपके हाथ में है सफलता की चाबी' तथा साध्वी जयन्तमाला ने 'साध्वी हर्षकुमारी की जीवनी' आचार्य प्रवर को भेंट की।

स्वागत भाषण मर्यादा महोत्सव प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष पन्नालाल बैद ने प्रस्तुत किया। साध्वी संघप्रभा, समणीवृन्द, मुनिवृन्द, साध्वी मंगलप्रज्ञा, केलवा चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष महेन्द्र कोठारी आदि ने अपनी अभिव्यक्तियां दी। मोहनलाल कठोतिया ट्रस्ट, दिल्ली द्वारा वर्ष 2011 का प्रेक्षा ध्यान पुरस्कार रतनगढ के रणजीत दूगड़ को देने की घोषणा की गई। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

आचार्य महाश्रमण ने की रत्नादिक साधु–साध्वियों की चरणवन्दना

आचार्य महाश्रमण ने कहा – सरदारशहर में साधु–साध्वियां सीमित संख्या में थे परन्तु आज इस मर्यादा महोत्सव के पावन अवसर पर हम सभी अच्छी संख्या में उपस्थित हैं। रत्नादिक साधु–साध्वियां भी अच्छी संख्या में उपस्थित हैं। एक बार मैं सभी रत्नादिक साधु–साध्वियां की चरण वन्दना करना चाहता हूँ। स्थूल भाषा में उनसे आशीर्वाद लेना चाहता हूँ।

आचार्य प्रवर ने पट्ट से उतर कर पूरे धर्मसंघ के सामने जब रत्नादिक साधु–साध्वियों की चरण–वन्दना की वह दृश्य देखते ही बनता था। वह महान् क्षण धर्मसंघ के इतिहास में अमिट अक्षरों में लिखा जाने वाला क्षण बन गया। जिसने भी आचार्य प्रवर के विनय भाव, आदर भाव, सेवा भाव को देखा, वह धन्य हो गया। इससे पूर्व समारोह के प्रारम्भ में आचार्य प्रवर ने रत्नादिक मुनिवृन्द के लिए शिष्य की बजाए आज्ञानुवर्ती मुनि शब्द कहने की बात प्रकट की।

इससे पूर्व आचार्य महाश्रमण ने नाहर भवन से मर्यादा समवसरण की ओर कदम बढाये तो लोगो के सामने गजब का दृश्य उपस्थित था। पूरी यात्रा मर्यादित और अनुशासित थी। आगे–आगे मर्यादा यात्रा का बैनर लिए ज्ञानशाला के बच्चे चल रहे थे उनके पीछे मुमुक्षु परिवार, समणी वृन्द और साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी के नेतृत्व में साध्वियां पंक्तिबद्ध चल रही थी। उनके पीछे श्वेत गणवेश में आलोक बैद आचार्यश्री महाश्रमण के आगे ससम्मान अहिंसा के प्रतीक पचरंगे जैन ध्वज को लिए कदम से कदम मिलाते हुए चल रहा था। उनके पीछे सन्तवृन्द चल रहे थे। श्रद्धालुओं का कारवां जय घोष लगाता एवं गीतों के स्वर बिखेरता हुआ चल रहा था।

आचार्य महाश्रमण ने बनाया इतिहास

तेरापंथ का धर्मसंघ का 147वां मर्यादा महोत्सव ऐतिहासिक मर्यादा महोत्सव है। आचार्यश्री महाश्रमण ने इतिहास बनाते हुए 6 फरवरी को दीक्षित साध्वी मंगलप्रज्ञा को उनकी बड़ी दीक्षा से पूर्व ही सहअग्रणी बनाया। यह पहला अवसर है जब नवदीक्षित को बड़ी दीक्षा से पूर्व ही अग्रणी बनाया हो।

समय की अनुकूलता के साथ करेंगे पूर्वांचल यात्रा

आचार्य महाश्रमण ने अपने मुख्य सम्बोधन में पूर्वांचल वासियों द्वारा लम्बे समय से की जा रही अर्ज का उल्लेख करते हुए कहा कि मैनें पूर्व में पूर्वांचल वासियों की अर्ज का उल्लेख करते हुए कहा कि मैनें पूर्व में पूर्वांचल वासियों की अर्ज पर संघ से मिलने के लक्ष्य को महत्वपूर्ण बताते हुए नकार दी थी और अगर यात्रा होगी तो सर्वप्रथम वहां की यात्रा करने का इंगित किया था। अब मैं संघ से मिल चुका हूँ। साधु–साध्वियों से परामर्श भी कर लिया है। आज पूर्व किये गये इंगित से अगर को हटाते हुए करना चाहूंगा कि जब भी स्वास्थ्य एवं समय की अनुकूलता होगी तो बिहार, नेपाल, बंगाल, आसाम, उत्तरप्रदेश को परसने का भाव रखता हूँ।

दीक्षा प्रदाता को दिया मंत्री मुनि का दायित्व

आचार्य महाश्रमण ने अपने दीक्षा प्रदाता मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' को तेरापंथ के इतिहास में 52 वर्षों के बाद मंत्री मुनि का गरिमामय दायित्व प्रदान कर सम्मान किया। आचार्यप्रवर ने जैसे ही अपने द्वारा लिखित पत्र का वाचन करते हुए उसको खड़े होकर मुनि सुमेरमल को सौंपा तो हजारों–हजारों हाथ हवा में लहरा उठें और ओम् अर्हम् की हर्षाभिव्यक्ति रूपी ध्वनि से पण्डाल गूंज उठा। आचार्य महाश्रमण ने कहा कि सुमेरमलजी स्वामी ने मेरे जीवन निर्माण में काफी श्रम किया है। इन्होंने मेरी काफी सेवा की है। संसार से मोक्ष की ओर बढाने में इनका विशेष सहयोग मिला। इन्होंने मुझमें वैराग्य की भावना पैदा की, मुझे दीक्षा दी। मेरे ऊपर इनका काफी उपकार है।

मुनिश्री गम्भीर है, वैदुष्य है और वर्तमान आचार्य के दीक्षा प्रदाता है। इन सब तत्वों को ध्यान में रखते हुए मुनिश्री सुमेरमलजी (लाडनूं) को मंत्री मुनि दायित्व प्रदान करता हूँ। इस दुर्लभ क्षणों में सम्पूर्ण साधु समाज की ओर से वरिष्ठ संत मुनि सुमेरमल 'सुदर्शन' ने अपने 70वें दीक्षा दिवस का उल्लेख करते हुए अपने सहदीक्षित एवं नवमनोनीत मंत्री मुनि का अभिनन्दन किया। साध्वी समाज की ओर से शासनगौरव साध्वी राजीमती ने एवं समण श्रेणी की ओर से समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञा ने अभ्यर्थना की। सम्पूर्ण श्रावक समाज की तरफ से मर्यादा महोत्सव प्रवास व्यवस्था समिति, राजलदेसर की ओर से अध्यक्ष पन्नालाल बैद व तेरापंथी महासभा अध्यक्ष चेनरूप चिण्डालिया ने कृतज्ञता ज्ञापित की। मुनि सुमेरमल लाडनूं ने अपने स्वीकृति भाषण में कहा कि मंत्री मुनि की गम्भीरता को मैनें देखा है। वे बड़े विद्वान थे परन्तु क्या मैं उनके जैसा हूँ ? फिर भी मैं बड़े– बुजुर्गों के आशीर्वाद से इस दायित्व को निभाने में सफल बनने का प्रयास करुंगा। मौके पर साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने भी अभिवन्दना करते हुए कहा – मुनिश्री उच्च कोटि के विद्वान संत है। हमें एक मंत्री मुनि की आवश्यकता थी जिसे आज आचार्य प्रवर ने महत्ती कृपा कर पूरी की। लाडनूं नगरपालिका के अध्यक्ष बच्छराज नाहटा आदि ने भी अभिवन्दना की।

बड़ी हाजिरी का नयनाभिराम दृष्य

उन्होने कहा कि मर्यादा जीवन का आधार है और तेरापंथ जीवन निर्माण का अभिनव सिद्धान्त है। इस अवसर पर आचार्य प्रवर ने मर्यादा–पत्र का वाचन किया। साधु–साध्वियों व समणीवृन्द ने दीक्षा पर्याय के क्रम में खड़े होकर मर्यादा पालन का संकल्प दोहराया। बड़ी हाजिरी के दौरान अनुशासन व संगठन का शानदार स्वरुप श्रावकों के मन को भाया।

मुनि महेन्द्र कुमार बने बहुश्रुत परिषद् के सदस्य

आचार्य महाश्रमण ने सप्त सदस्य बहुश्रुत परिषद् के एक सदस्य मुनि दुलहराज के दिवंगत होने के बाद रिक्त हुए स्थान पर प्रो. मुनिश्री महेन्द्र कुमार को मनोनीत करते हुए कहा कि मुनिश्री को आचार्य महाप्रज्ञ ने आगम–मनीषी संबोधन दिया। आप विद्वान है, चिन्तनशील है। आज मैं आपको बहुश्रुत परिषद् का सदस्य मनोनीत करता हूँ । इस पर मुनि महेन्द्र कुमार ने आचार्य प्रवर को अभिवादन करते हुए इस आशीर्वाद को स्वीकार किया। मुनि महेन्द्र कुमार ने कहा कि तेरापंथ का रक्षण तभी होगा जब मर्यादा का रक्षण होगा। तेरापंथ मेरा पंथ है। आज तेरापंथ की 26 जनवरी है। जिस तरह से 26 जनवरी को भारतीय संविधान बना था वैसे ही आज के दिन तेरांपथ का संविधान बना था। उन्होंने कहा कि विश्व के सारे संविधानों का अध्ययन होगा, शोध होगा तो तेरापंथ का संविधान अलौकिक होगा। मुनि महेन्द्रकुमार ने आचार्यप्रवर का आभार ज्ञापित किया।

सर्वप्रथम दी महात्मा महाप्रज्ञ को श्रद्धांजलि

आचार्य महाश्रमण ने अपने गुरु एवं तेरापंथ के दशम् अधिशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ की स्मृति करते हुए कहा कि वि. सम्वत् 2067 के वर्ष में तेरापंथ के महाग्रन्थ का 10वां अध्याय अचानक बन्द हो गया और 11वां अध्याय खुल गया। उन्होंने कहा कि एक ऐसा व्यक्तित्व जिसमें दिव्यता का, महानता का दर्शन होता था। उनमें अनुकम्पा की चेतना का अवलोकन होता था। साधना साकार होती थी। इस अवसर पर आचार्यप्रवर के निर्देश पर सम्पूर्ण धर्मसंघ ने 2 मिनिट का ध्यान कर श्रद्धांजलि अर्पित की। आचार्य महाश्रमण ने चातुर्मासों की घोषणा के समय भी आचार्य महाप्रज्ञ को याद किया।